

>

Title: Further discussion on formulation of an action plan to rehabilitate persons displaced from Pakistan moved by Shri Arjun Ram Meghwal on 17.08.2012 (Discussion not concluded).

-

MR. CHAIRMAN : Now, we will take up Private Members' Resolution.

Item No. 11. Shri Arjun Ram Meghwal to continue.

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): सभापति महोदय, आपने मुझे इस महत्वपूर्ण व्यक्तिगत प्रस्ताव पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं जब पिछली बार बोल रहा था, तब यह बता रहा था कि डॉ. राम मनोहर लोहिया जी ने 3 अप्रैल, 1964 को इसी हाउस में जो कहा था, उसका मैं जिक्र कर रहा था। उन्होंने कहा था कि जीने का अधिकार दुनिया का सबसे बड़ा अधिकार है।

सभापति महोदय, मेरा आपके माध्यम से कहना है, यह तर्क देना कि पाकिस्तान में जो हिन्दू रह रहे हैं, वे किसी कारण से भारत में आ रहे हैं, उनको बहुत सारी तकलीफें हैं। उनका मेटर सोल्व नहीं करेंगे, यह कह करके कि ये पाकिस्तान का आंतरिक मामला है, यह कहना ठीक नहीं है। श्री राम मनोहर लोहिया जैसे विद्वान ने यह सोच-समझ कर कहा था कि जीने का अधिकार दुनिया का सबसे बड़ा अधिकार है। जब उसका वहां जीने का अधिकार सुरक्षित नहीं है, पाकिस्तान को सुरक्षित रखना चाहिए था। जब उसका वहां जीने का अधिकार सुरक्षित नहीं है तो यहां उसकी चर्चा होनी चाहिए। वे लोग जो तकलीफ में हैं, उनकी तकलीफें दूर करने का इस सदन को भी अधिकार है।

सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से सदन में बताना चाहता हूँ कि अभी वर्तमान में पाकिस्तान की 18 करोड़ की पापुलेशन है, ऐसा मोटा-मोटा माना जाता है। जब देश आजाद हुआ था तो पाकिस्तान में तीन करोड़ की आबादी थी। कुछ लोग 3.41 करोड़ भी कहते हैं, आना-जाना लगा रहा था, लेकिन एक मोटा-मोटा अनुमान के तहत तीन करोड़ की आबादी थी। ...(व्यवधान) मैं वैस्ट पाकिस्तान की बात कर रहा हूँ, जिनमें पांच परसेंट हिंदू थे, नॉन मुस्लिम्स जिनको बोलते हैं, वर्तमान में पाकिस्तान की पापुलेशन आठ करोड़ है, जिसमें दो परसेंट हिंदू वहां रहे हैं। वहां बीस हजार पाकिस्तानी सिखों की स्थिति भी खराब है, मीडिया में बार-बार यह बात आ रही है। 1,500 यहूदी भी पाकिस्तान छोड़कर जा चुके हैं। यह नोट करने वाली बात है कि वर्ष 1947 के बाद 1,500 यहूदी भी पाकिस्तान छोड़कर विभिन्न देशों में जा चुके हैं और 20 हजार पाकिस्तानी सिखों की स्थिति भी अच्छी नहीं है। ईसाई कहते हैं कि हम कहां जाएं?

जो हिंदू पाकिस्तान से यहां आ रहे हैं, वे अधिकांशतः धार्मिक वीजा पर आते हैं, लेकिन जो अब तक आए हैं, मैं उनका थोड़ा सा ब्यौर देना चाहूंगा। पाकिस्तान के विभाजन के समय उस एरिया से जो हिंदू यहां आए, वे शरणार्थी कहलाए। कुछ लोगों ने कहा कि हमें शरणार्थी मत कहो, पुरुषार्थी कहो। उन्होंने एक आंदोलन भी चलाया कि हम शरणार्थी नहीं, पुरुषार्थी हैं। मुझे इस हाउस में कहते हुए फल है कि वर्ष 1947 में जो लोग आए, उन्होंने अपने पुरुषार्थ के माध्यम से इस देश में बड़ा नाम कमाया, चाहे सिंध से आए हुए लोग हों, चाहे और कोई लोग आए हों, लेकिन उन्होंने इस देश में बड़ा नाम कमाया। वर्ष 1965 का जब युद्ध हुआ तो उस समय दस हजार के करीब हिंदू फिर पाकिस्तान से आए और वर्ष 1971 का युद्ध हुआ तो उस समय लगभग 90 हजार लोग भारत आए। वर्ष 1990 से 2012 तक लगभग बीस हजार लोग फिर भारत आए। वहां पहले फेंसिंग नहीं थी, अब फेंसिंग है, तो भी लोग वहां से आ रहे हैं। अब सीमा पर फेंसिंग के बाद भी लोग आते हैं, क्योंकि लोगों का यह कहना है कि पाकिस्तान में उनकी लाइफ को थ्रैट है, उनके साथ अत्याचार और अनाचार होता है, लड़कियों के साथ बलात्कार होता है। वहां बंधुआ मजदूरों की तरह वे जीवन जीने को मजबूर हैं, इसलिए वे यहां आते हैं।

मैं राजस्थान से आता हूँ। पिछले महीनों में यह विषय मीडिया में भी बहुत चर्चा में आया। उसका कारण 171 हिंदू परिवार, जो पाकिस्तान में रहते थे या पाकिस्तानी नागरिक हैं, वे भारत आए। उन्होंने आकर प्रेस को बयान दिया कि हम वापस पाकिस्तान नहीं जाना चाहते हैं। मेरा कहना है कि वहां से जितने भी लोग आ रहे हैं, उनमें से अधिकतर एस.सी. और एस.टी. के लोग हैं। वे थार एक्सप्रेस से आते हैं। जोधपुर में उसका ट्रेजिट स्टेशन है। उनके पुराने रिश्तेदार बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर में रहते हैं, तो वे कहते हैं कि हमारा रेवेन्यू रिकार्ड बोलता है कि हमारी जो जमीन है, वह हमारे दादा जी के नाम थी। मैं किसी काम से मजदूरी करने पाकिस्तान चला गया था। ...(व्यवधान)
